पाठ - 29

G448I9

गोपाल कृष्ण गोखले

"मुझे भारत में एक पूर्ण सत्यवादी आदर्श पुरुष की तलाश थी, और वह आदर्श पुरुष गोखले के रूप में मिला। उनके हृदय में भारत के प्रति सच्चा प्रेम व वास्तविक श्रद्धा थी। वे देश की सेवा करने के लिए अपने सारे सुखों और स्वार्थ से परे रहे।"

महात्मा गांधी ने ये शब्द गोपाल कृष्ण गोखले के लिए कहे थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन देश और समाज की सेवा में अर्पित कर दिया।

गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म 9 मई सन् 1866 को रत्नागिरि के कोटलुक गाँव में हुआ। उनके पिता कृष्णाराव एवं माता सत्यभामा थीं। माता-पिता अत्यंत सरल स्वभाव के थे। उन्होंने गोखले को बचपन से ही देश-समाज के प्रति निष्ठा, विनम्रता जैसे गुणों की शिक्षा दी।

पिता की असमय मृत्यु के कारण गोखले को शिक्षा प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बड़े भाई गोविन्द पंद्रह रुपये महीना की नौकरी करते थे जिसमें से वे हर माह आठ रुपये गोखले को भेजने लगे ताकि उनकी शिक्षा में व्यवधान न पड़े।

गोखले यह अनुभव करते थे कि भाई किस कठिनाई से उनकी सहायता कर रहे हैं। अत्यंत संयमित जीवन व्यतीत करते हुए उन्होंने साधनों के अनुरूप अपने को ढाला। ऐसा समय भी आया जब वे भूखे रहे और उन्हें सड़क की बत्ती के नीचे बैठकर पढ़ाई करनी पड़ी। इन कठिन परिस्थितियों में भी उनका सम्पूर्ण ध्यान पठन-पाठन में लगा रहा। सन् 1884 में उन्होंने मुम्बई के एलफिंस्टन कॉलेज से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। गोखले का अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार था। गणित और अर्थशास्त्र में उनकी अद्भुत पकड़ थी जिसके बल पर वे तथ्यों व आँकड़ों का विश्लेषण और उनकी विवेचना विद्वतापूर्ण ढंग से करते थे। इतिहास के ज्ञान ने उनके मन में स्वतंत्रता व प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा उत्पन्न की।

स्नातक होने के पश्चात् गोखले भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई0सी0एस0) इंजीनियरिंग या वकालत जैसे लाभदायक व्यवसायों में जा सकते थे, किंतु इस विचार से कि बड़े भाई के ऊपर और आर्थिक बोझ न पड़े उन्होंने इन अवसरों को छोड़ दिया । वे सन् 1885 में पुणे के न्यू इंगलिश कॉलेज में अध्यापन कार्य करने लगे। इस कार्य में उन्होंने स्वयं को जी-जान से लगा दिया और एक उत्कृष्ट शिक्षक साबित हुए। अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार और ज्ञान से वे छात्रों के चहेते बन गए। उन्होंने अपने सहयोगी एन0 जे0 बापट के साथ मिलकर अंकगणित की एक पुस्तक संकलित की जो अत्यंत लोकप्रिय हुई। इस पुस्तक का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ।

सन् 1886 में बीस वर्ष की उम्र में गोपाल कृष्ण गोखले ने सक्रिय रूप से समाज सेवा और राजनीति में प्रवेश कर लिया। इससे पूर्व 'डेकन एजूकेशनल सोसाइटी' में अपनी गतिविधियों के कारण वे सार्वजनिक जीवन से सम्बंधित उत्तरदायित्व वहन करने की कला में महारथ हासिल कर ही चुके थे। उन्होंने 'अंग्रेजी हुकूमत के आधीन' विषय पर कोल्हापुर में अपना प्रथम भाषण दिया। अभिव्यक्ति और भाषा प्रवाह के कारण इस भाषण का जोरदार स्वागत हुआ। गोखले लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने के लिए शिक्षा को आवश्यक मानते थे।

गोखले विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए सामाजिक जीवन में चेतना का संचार करते रहे। गरीबों की स्थिति में सुधार के लिए सन् 1905 में गोखले ने 'सवर्न्ट्स आॅफ इण्डिया सोसाइटी' की स्थापना की। शीघ्र ही यह संस्था समाज सेवा करने को तत्पर युवा, उत्साही और निःस्वार्थ कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण स्थल बन गई। इनमें अधिकांश कार्यकर्ता स्नातक थे। आदिवासियों का उत्थान करना, बाढ़ व अकाल पीड़ितों की मदद करना, स्त्रियों को शिक्षित करना और विदेशी शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष करना इस संस्था के प्रमुख उद्देश्य थे। कार्यकर्ताओं पर गोखले का अत्यंत प्रभाव था, जिसे देखकर किसी ने टिप्पणी की

थी-"**केवल एक गोखले से ही हमारी रूह काँपती है। उसके जैसे बीसियों और बन रहे हैं, अब हम क्या करेंगे ?"**

गोखले के जीवन पर महादेव गोविन्द रानाडे का प्रबल प्रभाव था। वे सन् 1887 में रानाडे के शिष्य बन गए। रानाडे ने उन्हें सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में 15 वर्ष तक प्रशिक्षित किया और ईमानदारी, सार्वजनिक कार्यों के प्रति समर्पण व सहनशीलता का पाठ पढ़ाया।

गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत आए तो गोखले से मिले। वे गोखले के विनम्र स्वभाव तथा जन जागरण हेतु किए गए प्रयासों से अत्यंत प्रभावित हुए। गांधी जी ने गोखले को अपना 'राजनैतिक गुरु' मान लिया। गांधी जी कहते थे, "**गोखले उस गंगा का प्रतिरूप हैं, जो अपने हृदय-स्थल पर सबको आमंत्रित करती रहती है और जिस पर नाव खेने पर उसे सुख की अनुभूति होती है।"** गांधी जी ने गोखले से स्वराज प्राप्ति का तरीका सीखा। गोखले भी गांधी जी की सादगी और दृढ़ता से अत्यंत प्रभावित हुए और उन्हें बड़े भाई सा आदर देने लगे।

सन् 1889 में गोखले इण्डियन नेशनल कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। उन्होंने कांग्रेस के मंच से भारतीयों की विचारधारा, सपनों और उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को अपनी तर्कपूर्ण वाणी और दृढ़ संकल्प द्वारा व्यक्त किया। सन् 1905 में गोखले कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में लाला लाजपतराय के साथ इंग्लैण्ड गए। उन्होंने ब्रिटिश राजनेताओं और जनता के सामने भारत की सही तस्वीर प्रस्तुत की। अपने पैंतालीस दिन के प्रवास के दौरान उन्होंने विभिन्न शहरों में प्रभावपूर्ण पैंतालीस सभाओं को सम्बोधित किया। श्रोता मंत्र-मुग्ध होकर उन्हें सुनते। निःसंदेह गोखले भारत का पक्ष प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने में सर्वाधिक सक्षम नेता थे।

अलीगढ़ कॉलेज अंग्रेजों और अंग्रेजी राज्य के समर्थकों तथा राष्ट्रीय कांग्रेस के विरोधियों का गढ़ माना जाता था, किंतु वहाँ भी राष्ट्रवादी छात्रों का एक प्रभावशाली समूह था। गोखले के विचारों की अलीगढ़ के छात्रों पर इतनी गहरी छाप थी, कि जब गोखले वहाँ भाषण देने पहुँचे तो वहाँ छात्रों ने उनकी बग्घी के घोड़े हटा दिए और स्वयं बग्घी में जुत गए। वे बग्घी को खींचते हुए 'गोखले जिन्दाबाद' 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए स्ट्रेची हाल तक ले आए।

गोखले ने समाज सेवा को अपने जीवन का परम लक्ष्य बना लिया था। सन् 1898 में मुम्बई में प्लेग का प्रकोप हुआ। उन्होंने अपने स्वयंसेवकों के साथ दिन-रात प्लेग पीड़ितों

की सेवा की। साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ाने के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किए। उन्होंने सरकार से मादक पदार्थों की बिक्री खत्म करने का अनुरोध किया । वे अधिकाधिक भारतीयों को नौकरी देने, सैनिक व्यय को कम करने तथा नमक कर घटाने की माँगें निरंतर उठाते रहे। उन्होंने निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को प्रारंभ करने, कृषि तथा वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा देने तथा अकाल राहत कोष का सही ढंग से इस्तेमाल करने हेतु सरकार पर बराबर दबाव बनाए रखा।

दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों के प्रति गोखले की अत्यधिक सहानुभूति थी। अपने उन बंधुओं पर होने वाला अन्याय उन्हें अपने ऊपर हुआ अन्याय लगता था। गांधी जी के निमंत्रण पर वे सन् 1912 में दक्षिण अफ्रीका गए। ऐसा पहली बार हुआ था जब कोई भारतीय राजनेता प्रवासी भारतीयों की स्थिति को परखने के लिए भारत से बाहर गया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की सरकार से जातीय भेद-भाव को समाप्त करने का आग्रह किया।

गोखले देश की आजादी, सामाजिक सुधार और समाज सेवा हेतु अथक परिश्रम करते रहे। निरंतर श्रम से उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। उन्हें मधुमेह और दमा ने घेर लिया। 19 फरवरी 1915 की रात्रि दस बजकर पच्चीस मिनट पर उन्होंने अन्तिम साँस ली। उन्होंने आकाश की ओर आँखें उठाई और हाथ जोड़कर प्रभु को प्रणाम करते हुए सदा के लिए आँखें मूँद लीं।

गोपाल कृष्ण गोखले अपने कार्यों और आदर्शों के कारण सदा अमर रहेंगे।

अभ्यास

1. गोखले की दृष्टि में समाज में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने के लिए सर्वोपरि आवश्यकता क्या थी ?

2. गांधी ने गोपाल कृष्ण गोखले को राजनैतिक गुरु क्यों माना ?

3. केवल एक गोखले से हमारी रूह काँपती है। उसके जैसे बीसियों और बन रहे हैं अब हम क्या

करेंगे ?”

-गोखले के बारे में यह टिप्पणी क्यों की गई ?

4. गोखले ने किन बातों के लिए सरकार पर बराबर दबाव बनाए रखा ?

5. अलीगढ़ कॉलेज पहुँचने पर गोखले का स्वागत वहाँ के छात्रों ने किस प्रकार किया ?

6. सही (√) अथवा गलत (X) का चिह्न लगाइए-

क. गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म माना वाला गाँव में हुआ।

ख. गोखले का अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार था।

ग. गोखले सफल शिक्षक थे।

घ. गोपाल कृष्ण गोखले इंग्लैण्ड में भारत की सही तस्वीर प्रस्तुत नहीं कर पाए।

ङ. गोखले कृषि तथा वैज्ञानिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते थे।

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. गोपाल कृष्ण गोखले के पिता ..... एवं माता ..... थीं।

ख. उन्होंने मुम्बई के ..... कॉलेज से ..... की परीक्षा उत्तीर्ण की।

ग. गोखले को ..... कहा जाता था।

घ. गोखले ने ..... को अपने जीवन का परम लक्ष्य बना लिया था।

8. 'सवर्ण्ट आफ इण्डिया' सोसाइटी के क्या उद्देश्य थे ? सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

- आपकी इस पुस्तक में भारत की बहुत सी महान विभूतियों से सम्बंधित पाठ दिए गए हैं। हम इन विभूतियों के बारे में क्यों पढ़ते हैं ? अपने विचार लिखिए।